IASBABA

One Stop Destination for UPSC/IAS Preparation

60 Days Week-5&6 Compilation

DELHI

5B, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi –110005. Landmark: Just 50m from Karol Bagh Metro Station, GATE No. 8 (Next to Croma Store)

Ph:0114167500

BANGALORE

#1737/37, MRCR Layout, Vijaynagar Service Road, Vijaynagar, Bangalore 560040. PH: 09035077800 / 7353277800

support@iasbaba.com

www.iasbaba.com

Q.1) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

अवधि / युग	अभिलक्षणिक विशेषता
1. पुरापाषाण युग	पत्थरों के छोटे औज़ार (microliths)
2. मध्य पाषाण युग	मृदभांडों का आविष्कार
3. नवपाषाण काल	आग की खोज

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी गलत तरीके से मेल खाती है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.1) Solution (d)

- भारतीय पाषाण युग को मुख्य रूप से तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है:
  - पुरापाषाण युग (5,00,000–10,000 ईसा पूर्व) - शिकारी और भोजन एकत्रित करने वाले
  - मध्य पाषाण युग (10,000–6000 ईसा पूर्व) - शिकारी और पशुचारण
  - नवपाषाण युग (6,000–1000 ईसा पूर्व) - खाद्य उत्पादन चरण।
- पुरापाषाण युग के दौरान मनुष्य को कृषि, गृह निर्माण, मृदभांड या किसी भी धातु का ज्ञान नहीं था। यह केवल उत्तरवर्ती चरणों में हुआ था, जब उन्हें अग्नि का ज्ञान प्राप्त किया। मनुष्य, इस अवधि के दौरान, बिना पॉलिश किए हुए, बड़े खुरदरे पत्थरों के औज़ारों का उपयोग करता था - जिनमें मुख्य रूप से हाथ की कुल्हाड़ियाँ, विदारक (cleavers), चॉपर्स, ब्लेड और खुरचनी (स्क्रेपर्स) थे।
- मध्य पाषाण युग के विशिष्टीकृत उपकरण पत्थर के छोटे औज़ार (microliths) थे (लघु पत्थर के औजार आमतौर पर क्रिप्टो-क्रिस्टलीय सिलिका, स्फटिक (chalcedony) या शिष्ट (chert) से बने होते हैं, ये दोनों ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकार के होते हैं)। वे न केवल स्वयं में उपकरण के रूप में उपयोग किए जाते थे, बल्कि उन्हें लकड़ी या हड्डी के हैंडल पर रखने के बाद मिश्रित उपकरण, भाला (spearheads), तीर (arrowheads) और हंसुआ बनाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था।
- नवपाषाण युग के समुदायों ने पहले हाथ से और फिर कुम्हार के चाक की मदद से मृदभांड बनाए। उनके मृदभांडों में काले जले हुए मृदभांड, धूसर मृदभांड शामिल थे।

Q.2) निम्नलिखित में से किस पूर्व-ऐतिहासिक स्थल से तीनों काल, नवपाषाण, ताम्रपाषण और लौह युगीन बस्तियों की उपस्थिति पाई गई थी?

a) पिकलीहल
b) कोल्डिहवा
c) बुर्जहोम
d) पैयमपल्ली

Q.2) Solution (b)

अपने विशिष्ट पहलुओं के साथ कुछ महत्वपूर्ण उत्खनित नवपाषाण स्थल इस प्रकार हैं:

- जम्मू-कश्मीर में बर्ज़होम (अद्वितीय आयताकार कुल्हाड़ी (chopper), घरेलू कुत्तों को कब्रों में अपने मालिकों के साथ दफनाया जाना) और गुफ्फक्राल (गड्ढे में रहने के लिए प्रसिद्ध, पत्थर के औजार और घरों के भीतर स्थित कब्रिस्तान) प्रमुख हैं
- मास्की, ब्रह्मगिरि, पिकलिहल (मवेशी चराने का प्रमाण), बुदिहाल (सामुदायिक भोजन तैयार करना और दावत देना), और कर्नाटक में टेककलकोटा।
- तमिलनाडु में पय्यमपल्ली और आंध्र प्रदेश में उतनूर
- मेघालय में गारो पहाड़ियां, बिहार में चिरांद (हड्डी के औजार का विशेष रूप से उपयोग, जो विशेष रूप से सींग (antlers) से बने हुए थे)
- सरायखोला, तक्षशिला के निकट पोटवार पठार, अमरी, कोटदीजी और मेहरगढ़ (सबसे प्राचीन नवपाषाण स्थल, जिसे बलूचिस्तान का ब्रेडबास्केट (रोटी की टोकरी) कहा जाता है, पाकिस्तान का एक प्रांत है)
- कोल्डिहवा, बेलन घाटी में (तीनों नवपाषाण, ताम्रपाषण और लौह युगीन बस्तियों की उपस्थिति के मामले में अद्वितीय है), कोल्डीहवा और महागारा, इलाहाबाद के दक्षिण में (सीधे हाथ से बने मृदभांड के साथ गोलाकार झोपड़ियों के कई हिस्से मिले हैं; विश्व में सबसे प्राचीन चावल की खेती के साक्ष्यों में से एक)
- चोपानी - मांडो, बेलन घाटी (मृदभांडों के उपयोग का सबसे पहला साक्ष्य)
- बेलन घाटी, विंध्य के उत्तरी इलाकों पर, और नर्मदा घाटी के मध्य भाग में (पुरापाषाण बस्ती के तीनों चरणों के साक्ष्य, जिसके बाद मध्य पाषाणिक और नवपाषाणिक बस्तियाँ हैं)

Q.3) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

हड़प्पाई स्थल	नदी
1. मोहनजोदड़ो	सिंधु (Indus)
2. कालीबंगा	सिंध (Sindh)
3. आलमगीरपुर	हिंडन
4. हड़प्पा	सतलुज
5. लोथल	भोगवा

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1, 3 और 4
b) केवल 1, 2 और 5
c) केवल 1, 3 और 5
d) केवल 2, 4 और 5

Q.3) Solution (c)

नदियों के साथ कुछ महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल, जिन पर यह स्थित है:

- **सिंधु (Indus) - मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान)**, चन्हुद्डो (पाकिस्तान)।
- **रावी - हड़प्पा** (पाकिस्तान)।

- **घग्गर - कालीबंगन** (राजस्थान)।
- सतलज - रोपड़ (पंजाब)।
- सिंध (Sindh) - कोट दीजी (पाकिस्तान), अमरी (पाकिस्तान)।
- रंगोई - बनवाली (हरियाणा)।
- **हिण्डन - आलमगीरपुर** (उत्तर प्रदेश)।
- **भोगवा** (साबरमती की सहायक नदी) - **लोथल** (गुजरात)।

Q.4) हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सड़कों को ग्रिड पैटर्न के साथ बनाया गया था।
2. शासक वर्ग द्वारा बसाए गए दुर्ग (citadels), शहर के पूर्वी भाग में बनाए गए थे।
3. पत्थर से बने महान स्नानागार का उपयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए किया गया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा गलत है / हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) केवल 3
d) केवल 2 और 3

Q.4) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	असत्य	असत्य
हड़प्पा शहरों की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक सावधानीपूर्वक नियोजित जल निकासी प्रणाली थी। सड़क और गलियों को समकोण (90°) कोणों पर काटकर लगभग 'ग्रिड' पैटर्न के साथ बनाया गया था।	हड़प्पा सभ्यता में **दुर्ग या गढ़ (Citadels or Acropolis) शहर के पश्चिम भाग में बनाए गए थे। इस पर शासक वर्ग के सदस्यों** का अधिकार था। प्रत्येक शहर में गढ़ के नीचे एक निचला शहर होता है जिसमें ईंट के घर होते हैं, और जिनमें आम लोग रहते थे।	महान स्नानागार दुर्ग टीले में स्थित था तथा इसमें अनुष्ठानिक स्नान किया जाता था। इसे पकी हुई ईंटों से बनाया गया था।

Q.5) सिंधु घाटी सभ्यता की पशुपति मुहरों (Pashupati Seal) पर निम्नलिखित में से किस जानवर की पहचान की गयी है?

1. हाथी
2. गैंडा (Rhinoceros)
3. शेर
4. भैंस
5. मृग (Antelope)

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1, 3 और 4
b) केवल 1, 4 और 5
c) केवल 1, 2, 4 और 5
d) केवल 1, 2, 3 और 5

Q.5) Solution (c)

- सींग वाली भैंस की आकृति (buffalo-horned figure) वाली पशुपति मुहर को लगभग सर्वसम्मति से शिव के रूप में पशुपति, पशुओं के भगवान के रूप में पहचाने जाते हैं - जो सबसे प्रसिद्ध और सबसे व्यापक रूप से प्रासंगिक हड़प्पाई मुहर है।
- उन्हें पैर मोड़े हुए बैठा हुआ, यानी योगिक 'पद्मासन' और व्यापक-सशस्त्र के रूप में चित्रित किया गया है। पृथ्वी की ओर इशारा करते हुए आकृति की भुजाएँ, चौड़ी और घुमावदार सींगों की योगिक प्रकृति, शक्ति संचारित करती है तथा संतुलन स्थापित करती है।
- एक हाथी और एक बाघ को बैठा आकृति के दाईं ओर चित्रित किया गया है, जबकि बाईं ओर एक गैंडे और एक भैंस को देखा गया है। इन जानवरों के अलावा तल के नीचे दो मृग दिखाए गए हैं।

Q.6) ऋग्वैदिक काल के दौरान सामाजिक-आर्थिक जीवन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. समाज स्पष्ट रूप से चार वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित था।
2. कृषि प्रमुख आर्थिक गतिविधि थी।
3. मुद्रा की इकाई निष्क थी, जो सोने की बनी हुई थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Q.6) Solution (c)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	असत्य	सत्य
ऋग्वैदिक या प्रारंभिक वैदिक काल (1500 - 1000 ई.पू.) के दौरान सामाजिक विभाजन कठोर नहीं थे। ऋग्वेदिक समाज से सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक वर्ण व्यवस्था के रूप में सामाजिक भेदभाव का उदय और वृद्धि था। उत्तर वैदिक समाज को स्पष्ट रूप से चार वर्णों में विभाजित किया गया था: जो ब्राह्मण, राजन्य या क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे।	चूंकि ऋग्वैदिक समाज एक पशुचारण समाज था, इसलिए पशुपालन उनकी प्रमुख गतिविधि थी। धन का मुख्य माप मवेशी थे और एक धनाढ्य व्यक्ति को गोमत के नाम से जाना जाता था, ऐसा उन्हें कहा जाता था, जिनके पास अधिक मवेशी थे। उत्तर वैदिक काल (1000 - 600 ई.पू.) के दौरान कृषि मुख्य व्यवसाय बन गया था।	ऋग्वैदिक काल में व्यापार और वाणिज्य के साक्ष्य अल्प थे, तथा वस्तु विनिमय प्रणाली पर व्यापार किया गया था। कुल मिलाकर संसाधनों पर अधिकार प्राप्त वंश होते थे। मुद्रा की इकाई निष्क थी, जो सोने से बनी हुई थी।

Q.7) वैदिक संस्कृति के दौरान दो लोकप्रिय राजनीतिक संगठनों, सभा और समिति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सभा बड़ों (elders) की एक परिषद होती थी, जबकि समिति सभी लोगों की एक सामान्य सभा थी।

2. उत्तर वैदिक काल में सभा और समिति ने अपना महत्व खो दिया था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1 और न ही 2

Q.7) Solution (c)

कथन 1	कथन 2
सत्य	सत्य
सभा और समिति नामक दो लोकप्रिय निकाय थे। सभा बड़ों की एक परिषद थी। समिति सभी लोगों की एक सामान्य सभा थी।	उत्तर वैदिक काल में, प्रशासन में मौजूदा पुरोहित, सेनानी और ग्रामिणी के अलावा बड़ी संख्या में नए अधिकारी शामिल थे। निचले स्तरों पर, ग्राम सभाओं द्वारा प्रशासन किया जाता था। उत्तर वैदिक काल में सभा और समिति का महत्व कम हो गया था।

Q.8) बिम्बिसार के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वह मगध साम्राज्य के शिशुनाग वंश से संबंधित थे।
2. उन्होंने वैवाहिक गठबंधनों द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत किया।
3. वह वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध दोनों के समकालीन थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.8) Solution (c)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	सत्य	सत्य
बिम्बिसार (**546–494** ईसा पूर्व) मगध साम्राज्य के हर्यंक वंश से संबंधित थे। उनकी राजधानी राजगृह (गिरिराज) थी, जो एक प्रभावशाली शहर था और पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ लगभग अभेद्य था, जिसमें सभी तरफ पत्थर की दीवारों वाले द्वार खुलते थे।	उन्होंने तीन वैवाहिक गठबंधनों द्वारा अपनी स्थिति मजबूत की। विभिन्न शासकों के साथ विवाह संबंधों ने भारी कूटनीतिक प्रतिष्ठा दी तथा मगध के पश्चिम और उत्तर की ओर विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी पहली पत्नी कोशल की महाकोशल (प्रसेनजित की बहन) थी, जिन्हें दहेज में काशी का	वह गौतम बुद्ध और वर्धमान महावीर दोनों के समकालीन थे। हालांकि, दोनों धर्मों ने उन्हें अपने समर्थक और भक्त के रूप में दावा किया है।

	क्षेत्र मिला था, जिससे 1,00,000 सिक्कों का राजस्व प्राप्त होता था। उन्होंने वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी चेल्लना, से शादी की थी।	

Q.9) पूर्व से पश्चिम की ओर, निम्नलिखित 'महाजनपदों' को व्यवस्थित करें।

1. अंग
2. अवंति
3. कोशल
4. मगध

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) 2 - 4 - 3 - 1
b) 2 - 3 - 4 - 1
c) 1 - 4 - 3 - 2
d) 1 - 3 - 4 - 2

Q.9) Solution (c)

सही क्रम (पूर्व से पश्चिम): अंग - मगध - कोशल - अवंति।

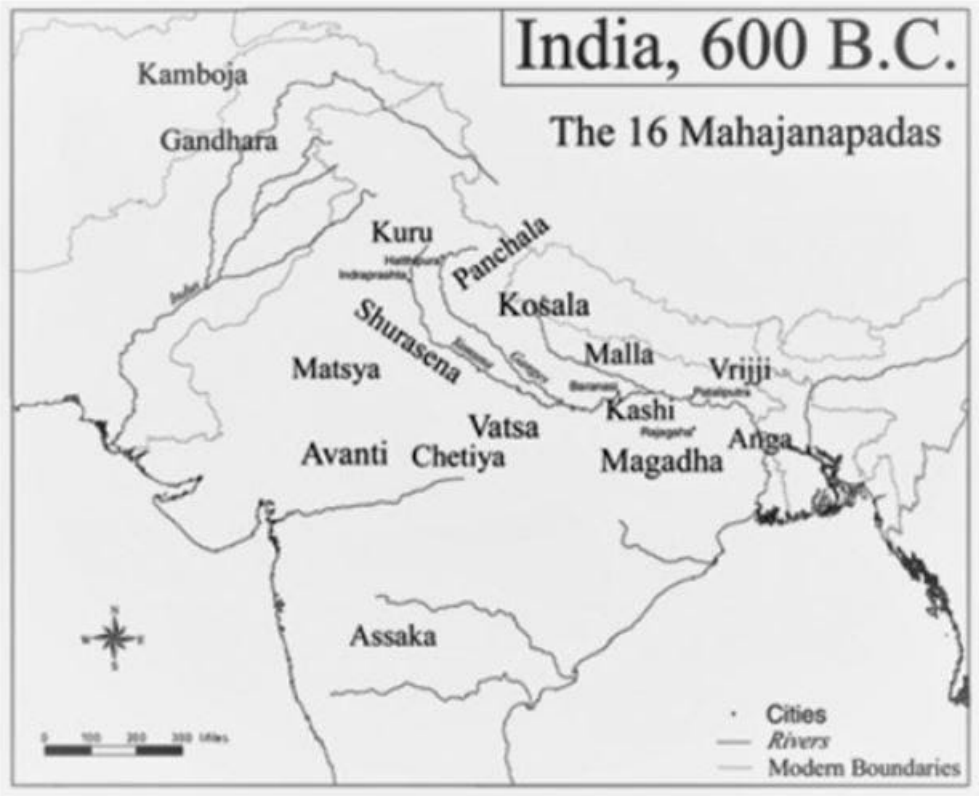

Q.10) निम्नलिखित में से कौन मौर्य प्रशासन में राजस्व विभाग का प्रमुख था और साम्राज्य के सभी राजस्व के संग्रह का प्रभारी था?

a) युक्ता (Yuktas)
b) समाहर्ता (Samharta)

c) रज्जुक (Rajukas)
d) निकाय (Nikayas)

Q.10) Solution (b)

- मौर्य काल को नवीन प्रशासनिक परिवर्तनों और एक विस्तृत प्रशासन द्वारा चिह्नित किया गया था।
- राजा ने मंत्रिपरिषद नामक दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में उनकी सहायता के लिए मंत्रियों की एक परिषद नियुक्त की।
- अमात्य (सभी उच्च अधिकारी, परामर्शदाता, और विभागों / मंत्रियों के कार्यकारी प्रमुख) दिन-प्रतिदिन के प्रशासन की देखभाल करने वाले नागरिक अधिकारी थे।
- **निकाय (*Nikayas*)** (प्रशिक्षित अधिकारी) अधिकारियों के विभाग भी थे जो साम्राज्य के सामान्य मामलों की देखभाल करते थे।
- सभी कार्यकारी अधिकारियों में, समाहरत्री या समाहर्ता (राजस्व के प्रमुख कलेक्टर) सबसे महत्वपूर्ण थे तथा उनकी जिम्मेदारियों में सभी प्रकार के स्रोतों से खातों को बनाए रखने और करों के संग्रह करना शामिल था।
- उपर्युक्त अधिकांश अधीक्षकों ने उनके आदेशों पर कार्य किया था।
- प्रांतों को आगे राज्य-विभागों द्वारा विभाजित किया गया था, जिनके पास कोई सलाहकार परिषद नहीं थी। रज्जुक नामक अधिकारियों के तहत प्रभागों को जिलों में विभाजित किया गया था। उन्हें लेखांकन, सचिवीय और अन्य विविध कार्यों में युक्ता (क्लर्क) द्वारा सहायता प्रदान की गई थी।
- जिले उसके बाद 5 या 10 गांवों के समूहों में विभाजित किए गए थे, जिनकी अगुवाई स्थानिक (जिन्होंने कर एकत्र किए थे), और गोपों द्वारा सहायता की गई थी (जिन्होंने उचित रिकॉर्ड और खातों को बनाए रखा था)।
- ग्राम / वृद्धों (गाँव के बुजुर्गों) के परामर्श पर ग्रामिणी / ग्रामिका की अध्यक्षता में सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई गाँव थी।

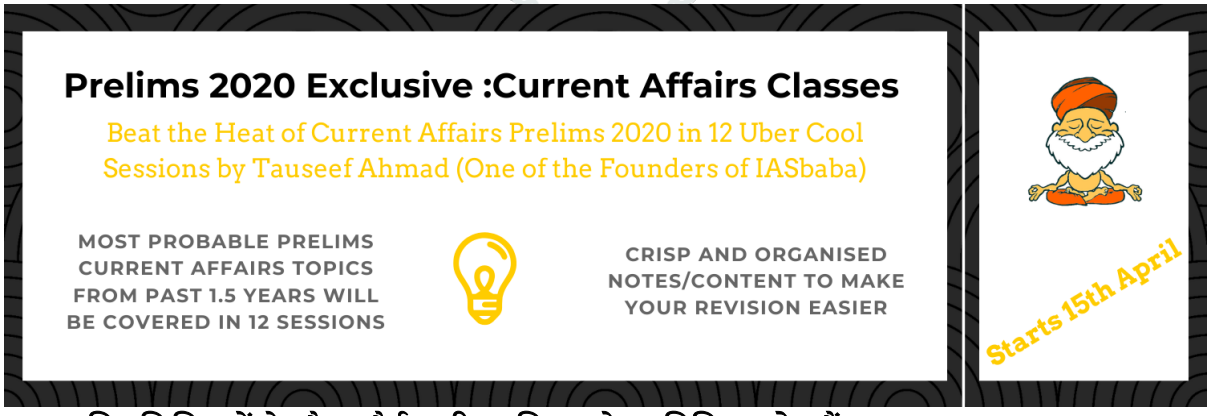

Q.11) निम्नलिखित में से कौन, मौर्यकालीन इतिहास के साहित्यिक स्रोत हैं?

1. मेगस्थनीज कृत इंडिका
2. हेमचन्द्र कृत परिशिष्टपर्वन
3. जातक कथाएँ
4. विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 4
b) केवल 1, 2 और 4
c) केवल 2 और 3

d) 1, 2, 3 और 4

Q.11) Solution (d)

- भारतीय उपमहाद्वीप के प्रारंभिक इतिहास में मौर्य काल एक उल्लेखनीय अवधि है। यह प्रथम उपमहाद्वीप साम्राज्य की स्थापना का प्रतीक है।
- मौर्य काल के स्रोत अधिक विविध हैं तथा पहले की अवधि की तुलना में अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज के इंडिका और रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिलालेख जैसे साहित्यिक स्रोत हैं, जो चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान एक सुदर्शन झील के निर्माण की शुरुआत का श्रेय देते हैं, तथा अशोक द्वारा जारी किए गए शिलालेख जो समकालीन इतिहास पर एक स्पष्ट प्रकाश डालते हैं।
- इस अवधि के लिए अन्य प्रमुख साहित्यिक स्रोतों में हेमचंद्र कृत परिशिष्टपर्वन (चंद्रगुप्त का जैन धर्म से संबंध स्थापित करना) शामिल हैं; 5 वीं शताब्दी का विशाखदत्त का मुद्राक्षस (चंद्रगुप्त के दुश्मनों के खिलाफ चाणक्य की चतुरता का वर्णन करने वाला एक ऐतिहासिक नाटक); दंडिन का दशकुमारचरित; बाणभट्ट का कादम्बरी अन्य प्रमुख स्रोत हैं।
- बौद्ध ग्रंथों की त्रिमूर्ति जो हमें चद्रगुप्त के जीवन का लेखा-जोखा देती हैं, अर्थात्, महावंश, मिलिंदपन्हो, और महाभाष्य; बौद्ध दीपवंश, अशोकावदान, दिव्यावदान (ये तीन ग्रंथ, साथ ही महाव्यास, हमें अशोक की जानकारी देता है); वामसत्तापकासिनी (चाणक्य और चंद्रगुप्त की गाथा पर 10 वीं शताब्दी का टीका); साथ ही, मामुलनार (Mamulanar) में समकालीन मौर्यों के दक्षिणी विस्तार का संदर्भ है।
- इन ग्रंथों के अलावा, पुराण और बौद्ध साहित्य जैसे कि जातक कथाएं मौर्यों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

Q.12) अशोक के शिलालेखों के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वे केवल या तो प्राकृत या पाली में लिखे गए थे।
2. वे अशोक के धम्म के साथ संबंधित थे तथा उसके अधिकारियों को निर्देश भी देते थे।
3. बारहवाँ (XII) शिलालेख कलिंग के साथ उनके युद्ध के बारे में विवरण देता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा गलत है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 1
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.12) Solution (a)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	सत्य	असत्य
अशोक के शिलालेखों को पहली बार 1837 में जेम्स प्रिंसप ने डिक्रिप्ट किया था। वे पाली भाषा में लिखे गए थे और कुछ स्थानों पर प्राकृत का उपयोग किया गया था। कन्धार	चौदह वृहद् शिलालेख हैं। XIII (13 वां) शिलालेख कलिंग के साथ उसके युद्ध के बारे में विवरण देता है।	VII (7th) वां स्तंभ शिलालेख उनके राज्य के भीतर धम्म को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों का एक सारांश देता है।

जैसे भागों में ग्रीक और आरमाइक भाषा का भी प्रयोग किया गया है।		

Q.13) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

प्रणाली या प्रथा	निम्न द्वारा प्रस्तुत या आरंभ किया गया
1. सैन्य गवर्नर प्रणाली	भारतीय - यूनानी
2. सरकार की 'क्षत्रप' प्रणाली	कुषाण
3. ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को भूमि के रूप में शाही अनुदान देना	शक

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.13) Solution (a)

- भारतीय-यूनानी (Indo-Greeks) भारत में सिक्के (सोना, चांदी, तांबा, और निकल) जारी करने वाले पहले शासक थे, तथा भारत में सोने के सिक्के जारी करने वाले भी पहले थे (जो कुषाणों के तहत संख्या में वृद्धि हुई थी)।
- मध्य एशियाई विजेताओं ने प्रशासन में नई शैली प्रस्तुत की। मिसाल के तौर पर, भारतीय-यूनानियों ने सैन्य गवर्नर शासन की प्रथा शुरू की, जिसमें उन्होंने रणनीतिकार नाम के सैन्य गवर्नर नियुक्त किए, जबकि कुषाणों ने सरकार की 'क्षत्रप' प्रणाली आरंभ की, जिसके तहत साम्राज्य को कई क्षत्रपों में विभाजित किया गया और प्रत्येक क्षत्रपी (*satrapi*) को एक क्षत्रप (*satrap*) के अधीन रखा गया। इन प्रणालियों ने एक सामंती संगठन के विकास का नेतृत्व किया, जिसमें इन मध्य एशियाई विजेताओं ने कई छोटे राजकुमारों पर अपना वर्चस्व स्थापित किया, जिन्होंने नियमित रूप से उन्हें उपहार अर्पित किया।
- सातवाहनों ने दक्षिणापथपति (दक्षिणापथ के भगवान) की उपाधि धारण की। सातवाहनों को इतिहास में ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को शाही अनुदान देने की प्रथा शुरू करने के लिए जाना जाता है, जिसमें कर छूट से जुड़े लोग भी शामिल थें। गौतमीपुत्र सतकर्णी के एक शिलालेख में उल्लेख किया गया है कि ब्राह्मणों को उपहार में दी गई भूमि क्षेत्र को शाही सैनिकों द्वारा प्रवेश या परेशान नहीं किया जाना था, नमक के लिए खोदा नहीं जाएगा, राज्य के अधिकारियों के नियंत्रण से मुक्त थी, और हर तरह के परिहार (प्रतिरक्षा) का आनंद लें रही थी। उन्होंने भिक्षुओं को भी भूमि देकर बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

Q.14) सातवाहन के बारे में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है / हैं?

1. शासक, गौतमीपुत्र सतकर्णी ने सिक्के जारी किए, जिस पर जहाजों (ships) की छवि अंकित की गई थी।
2. सातवाहनों का सबसे बड़ा बंदरगाह पश्चिमी दक्कन में 'कल्याणी' था।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1 और न ही 2

Q.14) Solution (b)

कथन 1	**कथन 2**
असत्य	**सत्य**
गौतमीपुत्र सातकर्णी का उत्तराधिकारी उनके पुत्र वशिष्ठपुत्र पुलमायी थे। पुलमायी ने सातवाहन शक्ति को कृष्णा नदी के मुहाने तक विस्तृत किया। उसने सिक्के जारी किए, जिस पर जहाजों की छवि अंकित की गई थी। वे सातवाहनों के नौसैनिक शक्ति और समुद्री व्यापार का चित्रण करते हैं।	सातवाहन का सबसे बड़ा बंदरगाह पश्चिम दक्कन पर 'कल्याणी' था। पूर्वी तट पर गंडकसेला और गंजम अन्य महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।

Q.15) संबंधित गुप्त शासकों के साथ, निम्नलिखित उपाधियों का मिलान करें:

1. राजधिराज	A. चंद्रगुप्त - प्रथम
2. सकरी (Sakari)	B. घटोत्कच
3. महाराजधिराज	C. चंद्रगुप्त - द्वितीय
4. भारत का नेपोलियन	D. समुद्रगुप्त

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) 1 – B; 2 – C; 3 – A; 4 – D
b) 1 – B; 2 – A; 3 – C; 4 – D
c) 1 – D; 2 – C; 3 – A; 4 – B
d) 1 – D; 2 – A; 3 – C; 4 – B

Q.15) Solution (a)

- गुप्त वंश के संस्थापक **श्री गुप्त** थे। इनका उत्तराधिकारी **घटोत्कच** था। इन दोनों को **महाराजा** कहा जाता था।
- **चंद्रगुप्त - I** (320 - 330 A.D.): गुप्त वंश के पहले महत्वपूर्ण राजा; जिन्होंने गुप्त साम्राज्य की नींव रखी और **महाराजाधिराज** (राजाओं के राजा) की उपाधि लिया। उन्होंने 319–20 ई. में गुप्त संवत की शुरुआत की, जो संभवतः उनकी परिग्रहण तिथि को चिह्नित करता है।

- **समुद्रगुप्त** (330 - 380 A.D.) चंद्रगुप्त प्रथम का पुत्र, जिसने युद्ध और विजय की नीति का पालन किया तथा अपने राज्य का विस्तार किया। उनके शासन का विस्तार पहले उनके तात्कालिक पड़ोसियों पर विजय से तथा फिर, पूर्व और दक्षिण के अभियानों द्वारा किया गया था, जहाँ प्रमुखों और राज्यों को अधिग्रहित किया गया था और उन्हें उपहार देने के लिए मजबूर किया गया था। उनकी इस नीति के कारण, इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने उन्हें '**भारत का नेपोलियन**' कहा था।
- गुप्त साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार का चरम **चंद्रगुप्त - II** के शासनकाल के दौरान पहुंच गया था, जिसने अन्य शाही राजवंशों के साथ विजय और वैवाहिक गठबंधनों द्वारा अपने साम्राज्य की सीमा को बढ़ाया था। उन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि ली, अर्थात जो सूर्य के समान शक्तिशाली और सिंहविक्रम है। पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों पर विजय के बाद, उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ किया और **सकरी (*Sakari*)** की उपाधि ली जिसका अर्थ शकों का संहारक कहा गया।

Q.16) गुप्त काल के दौरान न्यायिक प्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. नागरिक और आपराधिक कानूनों को स्पष्ट रूप से पहली बार सीमांकित किया गया था।
2. महादंडनायक का कार्यालय, जो मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करता था, सर्वोच्च न्यायिक शक्ति रखता था।
3. शिल्पकारों के गिल्ड अपने स्वयं के कानूनों द्वारा शासित होते थे।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.16) Solution (b)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	असत्य	सत्य
न्यायिक प्रणाली पहले के समय की तुलना में गुप्त शासकों के तहत कहीं अधिक विकसित थी। पहली बार, नागरिक और आपराधिक कानूनों को स्पष्ट रूप से सीमांकित किया गया था। चोरी और व्यभिचार आपराधिक कानून के तहत उपचारित किए गए विषय थे। विभिन्न प्रकार की संपत्ति के विवादों ने नागरिक कानून का गठन किया। विरासत के बारे में विस्तृत कानून बनाए गए थे।	हालांकि, पहले की अवधि की तरह, कानून वर्ण पदानुक्रम पर आधारित थे। सर्वोच्च न्यायिक शक्ति राजा के पास होती थी और उन्हें ब्राह्मण पुजारियों द्वारा मामलों में सहायता दी जाती थी महादण्डनायक का कार्यालय था, जिसने संभवतया मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया। उपरिक और विश्पतियों ने अपने-अपने क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र में न्यायिक कार्य किया।	व्यापारियों और शिल्पियों के अपराधियों को उनके स्वयं के कानूनों द्वारा शासित किया गया था तथा मृत्यु दंड बिल्कुल नहीं दे सकते थे (जैसा कि फा-ह्यान द्वारा विवरण दिया गया था)।

Q.17) गुप्त काल के दौरान लगाए गए हल कर (plough tax) को किस नाम से जाना जाता है

a) उपरिक
b) उद्रंग

c) वात-भूत कर (Vata-bhuta tax)
d) हलिरकर (Halirakara)

Q.17) Solution (d)

- गुप्त राजाओं ने उपज के एक-चौथाई से एक-छठे हिस्से तक अलग-अलग कर एकत्र किए। गुप्त शिलालेखों में दिखाई देने वाले दो नए कृषि कर उपारिकर (शायद अस्थायी रैयतों पर लगाया जाने वाला कर) और उद्रंग (इसकी सटीक प्रकृति स्पष्ट नहीं है, लेकिन जल कर या एक प्रकार का पुलिस कर हो सकता है) हैं।
- वात-भूत कर का भी उल्लेख है, जो हवाओं और आत्माओं के लिए किए गए संस्कारों के रखरखाव के लिए उपकर का उल्लेख करता है, तथा हलिरकर, संभवतः हल कर था। इन करों के अलावा, किसानों को शाही सेना और अधिकारियों की सेवा के लिए वृष्टि (बेगार श्रम) के अधीन किया गया था।
- वाकाटक शिलालेख में क्लिप्त (खरीद कर या बिक्री कर) और उपक्लिप्त (अतिरिक्त लघु कर) का उल्लेख है।

Q.18) निम्नलिखित पल्लव शासकों में से किसने मामल्लपुरम के बंदरगाह का निर्माण करवाया था?

a) महेंद्रवर्मन प्रथम
b) नरसिंहवर्मन प्रथम
c) महेंद्रवर्मन द्वितीय
d) नरसिंहवर्मन द्वितीय

Q.18) Solution (b)

- नरसिंहवर्मन I / महामल्ल (6308668 CE) ने अपने पिता की हार का बदला लिया और न केवल पुलकेशिन द्वितीय को हराया बल्कि पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य पर भी आक्रमण किया और श्रीलंका के राजकुमार, मानवर्मा की मदद से बादामी पर कब्जा कर लिया और 'वातापीकोंडा' की उपाधि धारण की।
- उन्होंने केवल चालुक्यों पर ही नहीं बल्कि चोलों, चेरों और कालाभरों पर भी विजय प्राप्त की।
- अपने मित्र मानवर्मा की मदद करने के लिए दो नौसैनिक अभियानों को रवाना किया, लेकिन बाद में मानवर्मा हार गए और उन्हें अपने दरबार में राजनीतिक शरण देनी पड़ी।
- वास्तुकला के उत्साही संरक्षक और मामल्लपुरम के बंदरगाह के निर्माण के साथ, उन्होंने महाबलिपुरम में रथ के निर्माण का भी आदेश दिया। यह नरसिंहवर्मन प्रथम के सम्मान में है कि महाबलीपुरम को मामल्लपुरम भी कहा जाता है।

Q.19) चोल ग्राम प्रशासन के संदर्भ में, 'एरिवरिया' (erivariya) शब्द से क्या संदर्भित है

a) शिल्पकारों और व्यापारियों की सभा।
b) अग्रहारों में वयस्क पुरुष सदस्यों का एकत्रित होना
c) जलाशय समिति, जो पानी के वितरण संबंधी कार्यों को देखती थी
d) बंजर भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित करना

Q.19) Solution (c)

- चोल अपने स्थानीय स्व-शासन मॉडल के लिए प्रसिद्ध थे, जिसे पंचायती राज प्रणाली के शुरुआती उदाहरणों में से एक माना जा सकता है।
- उर गैर-ब्रह्मादेय ग्रामों (या वेल्लनवगाई ग्रामों) के स्थानीय निवासियों की सामान्य सभा है, जो बिना किसी औपचारिक नियम या प्रक्रिया के मामलों पर चर्चा करते हैं।
- ब्राहमणों की विशेष सभा / अग्रहारों में वयस्क पुरुष सदस्यों का एकत्रीकरण होता है, अर्थात्, ये कर-मुक्त ब्रह्मादेय गांव होते थे, जिन्हें स्वायत्तता का बड़े पैमाने पर आनंद मिलता था, उन्हें सभा या महासभा के नाम से जाना जाता है।
- गाँव के मामलों का प्रबंधन एक कार्यकारी समिति द्वारा किया जाता था, जिसमें सदस्य संपत्ति रखने वाले शिक्षित व्यक्ति से या रोटेशन द्वारा चुने जाते थे। इन सदस्यों को हर तीन साल में सेवानिवृत्त होना पड़ता था। अलग-अलग समितियाँ थीं जो कानून और व्यवस्था, न्याय, जलाशय समिति जैसे कि **एरिवरिया' (erivariya)** (जिसे खेतों में पानी के वितरण को देखना पड़ता था) जैसी विभिन्न गतिविधियों की देखभाल करती थीं।

Q.20) चीनी यात्री, ह्वेन त्सांग ने निम्नलिखित में से किसके दरबार का दौरा किया था?

1. पल्लव के नरसिंहवर्मन प्रथम
2. पश्चिमी चालुक्यों के पुलकेशिन द्वितीय
3. हर्षवर्धन

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 3
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.20) Solution (d)

- चीनी बौद्ध तीर्थयात्री, ह्वेन त्सांग ने हर्ष के शासनकाल (606 - 647 A.D) के दौरान भारत का दौरा किया था। उन्होंने अपनी यात्रा का एक लंबा दस्तावेज़ छोड़ दिया है। उन्होंने महायान सिद्धांत के मूल्यों की व्याख्या की तथा दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय का दौरा किया और कुछ समय के लिए एक छात्र के रूप में भी रहे।
- नरसिंहवर्मन I (630-668 A.D.) के शासनकाल के दौरान, ह्वेन त्सांग ने पल्लव की राजधानी कांचीपुरम का दौरा किया।
- पुलकेशिन II (608-642 A.D.) के शासनकाल में सबसे महत्वपूर्ण घटना ह्वेन त्सांग का इनके राज्य में भ्रमण था।

Q.21) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

वैदिक साहित्य	संबद्धता
1. ब्राह्मण	दार्शनिक ज्ञान एवं आध्यात्मिक शिक्षा
2. अरण्यक	रहस्यवाद एवं प्रतीकवाद
3. उपनिषद	यज्ञ एवं अनुष्ठान

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 1 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.21) Solution (b)

- 'वैदिक साहित्य' शब्द का अर्थ 'वेदों पर आधारित या व्युत्पन्न साहित्य' है। वैदिक साहित्य के अंतर्गत निम्न ग्रंथ आते हैं:
  - चार वेद यानि संहिता
  - प्रत्येक संहिता से संबद्ध ब्राह्मण
  - अरण्यक, और
  - उपनिषद

युग्म 1	युग्म 2	युग्म 3
असत्य	**सत्य**	**असत्य**
ब्राह्मण वेदों की ऋचाओं की व्याख्या करते हैं। वे गद्य में लिखे गए हैं तथा वे अपने रहस्यवादी अर्थों के साथ विभिन्न यज्ञों और अनुष्ठानों का विस्तृत वर्णन करते हैं।	अरण्यक शब्द का अर्थ 'जंगल' है तथा इन्हें मुख्य रूप से जंगलों में रहने वाले ऋषियों और शिष्यों के लिए लिखी जाने वाली 'वन पुस्तकें' कहा जाता है। ये ब्राह्मणों या उनके परिशिष्टों के निष्कर्ष हैं। वे रहस्यवाद और प्रतीकवाद से संबंधित हैं।	उपनिषद शब्द की उत्पत्ति उपनिषद (Upanisad) से हुई है जिसका अर्थ 'किसी के समीप बैठना' है। ये दार्शनिक ज्ञान और आध्यात्मिक शिक्षा से संबंधित हैं।

Q.22) दर्शन के निम्नलिखित स्कूलों में से किसने जीवन के भौतिकवादी दृष्टिकोण को उन्नत किया?

1. सांख्य
2. न्याय
3. वैशेषिक
4. मीमांसा

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 4
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 4

Q.22) Solution (c)

- सांख्य के अनुसार, संसार ईश्वर या देवत्व की तुलना में प्रकृति या प्रकृत के लिए अपने सृजन और विकास को अधिक महत्व देता है। यह भौतिकवादी विश्व दृष्टिकोण था।

- इसी प्रकार, वैशेषिक स्कुल ने भौतिक तत्वों की चर्चा को महत्व दिया और इस प्रकार इनका भौतिकवादी अभिविन्यास था।
- हालांकि, योग, न्याय, मीमांसा और वेदांत में गैर-भौतिकवादी दृष्टिकोण था।
- योग ध्यान को मोक्ष पाने के तरीके के रूप में प्रचारित करता है। न्याय ज्ञान प्राप्त करने के लिए तर्क का उपयोग करने का आह्वान करता है और इस प्रकार मोक्ष प्राप्त करता है। मीमांसा ने मुक्ति पाने के लिए वैदिक कर्मकांडों को सही ठहराने के लिए तर्क के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया।
- अन्त में वेदांत कहता है कि केवल ब्रह्म या आत्मा ही वास्तविकता है और बाकी सब कुछ असत्य या माया है, इसलिए ब्रह्म का ज्ञान मोक्ष का मार्ग है।

Q.23) भारत में धार्मिक ग्रंथों के संदर्भ में, 'उत्तराध्यायान सूत्त' पाठ का संबंध किससे है

a) जैन धर्म
b) बौद्ध धर्म
c) वैष्णव
d) शैव

Q.23) Solution (a)

- महावीर के उपदेश उनके शिष्यों द्वारा संकलित किए गए थे। ये अक्सर कहानियों के रूप में होते थे, जो आम लोगों से आसानी से जुड़ सकते थे।
- 'उत्तराध्यायान सूत्त' जैन साहित्य के ग्रंथों में से एक है जो प्राकृत में लिखा गया था तथा बताया गया था कि कैसे कमलावती नाम की एक रानी ने अपने पति को दुनिया त्याग करने के लिए मनाने की कोशिश की थी।

Q.24) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

भारतीय दर्शन के स्कूल	संस्थापक
1. लोकायत	मक्खली गोशाल
2. आजीवक	चार्वाक
3. जैन धर्म	महावीर

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी गलत तरीके से मेल खाती है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.24) Solution (d)

युग्म 1	युग्म 2	युग्म 3
असत्य	असत्य	असत्य

चार्वाक द्वारा स्थापित चार्वाक या लोकायत को विचार के भौतिकवादी और नास्तिक स्कूल के रूप में जाना जाता है। लोकायत सामान्य लोगों से प्राप्त विचारों को संदर्भित करता है तथा यह अन्य लोक में विश्वास की कमी दिखाते हुए संसार (लोक) के साथ अंतरंग संपर्क के महत्व को रेखांकित करता है। चार्वाक आनंदपूर्ण जीवन जीने पर जोर देता है और आध्यात्मिक मुक्ति की खोज का विरोध करता है।	आजीवक या, 'जीवन के मार्ग के अनुयायी', एक तपस्वी समूह थे जो बुद्ध और महावीर के समय में शुरू हुए, और 14 वीं शताब्दी तक पाए गए। आजीवक की स्थापना मक्खली गोशाल ने की थी। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मगध में आजीवक बहुत लोकप्रिय थे तथा मौर्य राजाओं ने आजीवक भिक्षुओं के सम्मान में कई गुफाएँ दान की थीं।	प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (प्रतीक - बैल), जिनका संदर्भ ऋग्वेद और वायु पुराण में भी मिलता है, संस्थापक थे। वर्धमान महावीर जैन परंपरा के 24 वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म वैशाली के पास कुंडाग्रम में क्षत्रिय माता-पिता सिद्धार्थ और त्रिशला के यहाँ हुआ था।

Q.25) भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महायान सभी प्राणियों के लिए दुख से सार्वभौमिक मुक्ति में विश्वास करता है।
2. स्थिरवाद (Stharvivada) एक हीनयान संप्रदाय है।
3. महायान के विद्वानों द्वारा प्रयुक्त भाषा संस्कृत थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.25) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	सत्य
महायान या "महान वाहन" बौद्ध धर्म का एक स्कूल है जो बुद्ध को भगवान के रूप में मानता है तथा बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियों की पूजा करता है, जो बुद्ध प्रकृति का प्रतीक हैं। महायान सभी प्राणियों (इसलिए 'महान वाहन') के लिए दुःख से सार्वभौमिक मुक्ति में विश्वास करता है।	हीनयान, छोटा वाहन, बुद्ध के मूल शिक्षण या महापुरुषों के सिद्धांत में विश्वास करता है। यह मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता है तथा आत्म-अनुशासन और ध्यान के माध्यम से व्यक्तिगत मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करता है। हीनयान का अंतिम उद्देश्य इस प्रकार निर्वाण है। स्थिरवाद या थेरवाद एक हीनयान संप्रदाय है। अशोक ने हीनयान को संरक्षण दिया। पाली, जन भाषा का उपयोग हीनयान विद्वानों द्वारा किया गया था।	महायान का अंतिम उद्देश्य "आध्यात्मिक उत्थान" है। यह अमिताभ बुद्ध की कृपा के माध्यम से वैकल्पिक रूप से मोक्ष प्राप्त करने की अनुमति देता है तथा विश्वास और बुद्ध की मानसिकता के लिए अपने आप को समर्पित करता है। महायान की भाषा मुख्य रूप से संस्कृत थी।

Q.26) बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ, जातक कथाएं निम्नलिखित में से किसका एक हिस्सा हैं?

a) दीग्घ निकाय
b) अंगुत्तर निकाय
c) खुदक्क निकाय
d) मज्झिम निकाय

Q.26) Solution (c)

- तीनों पिटकों को निकायों (पुस्तकों) में विभाजित किया गया है। उदाहरण के लिए, सूक्त पिटक में पाँच निकाय शामिल हैं: दीघ निकाय (लंबे प्रवचनों का संग्रह), मज्झिम निकाय (मध्यम लंबाई के प्रवचनों का संग्रह), सम्युक्त निकया (दयालु प्रवचनों का संग्रह), अंगुत्तर निकाय (संख्या के अनुसार व्यवस्थित प्रवचनों का संग्रह), और खुद्दक निकाय (छोटे संग्रह)।
- खुद्दक निकाय को पन्द्रह पुस्तकों में विभाजित किया गया है, उनमें से प्रमुख हैं जातक (बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ), धम्मपद (नैतिक कथनों से संबंधित छंद), निदेस (प्रतिपादन/ expositions), बुद्धवंश (बुद्ध का इतिहास)। पतिसंबिदा (विश्लेषणात्मक ज्ञान), थेरगाथा और थेरिगाथा (बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों के गीत)।

Q.27) जैन धर्म के "त्रिरत्न" में निम्नलिखित में से कौन शामिल हैं?

1. सम्यक ज्ञान
2. सम्यक विचार
3. सम्यक चरित्र
4. सम्यक दर्शन
5. सम्यक वाक्

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1, 2 और 4
b) केवल 2, 3 और 5
c) केवल 1, 3 और 4
d) केवल 3, 4 और 5

Q.27) Solution (c)

- जैन धर्म में तीन रत्नों (जिन्हें रत्नत्रय भी कहा जाता है) को सम्यक दर्शन ('सही विश्वास'), सम्यक ज्ञान ('सही ज्ञान') और सम्यक चरित्र ('सही कार्य') के रूप में समझा जाता है।
- तीनों में से कोई एक-दूसरों से मुक्त होकर अनन्य अस्तित्व में नहीं हो सकता है, तथा सभी का होना आध्यात्मिक मुक्ति के लिए आवश्यक है यानी सांसारिक बंधनों से मुक्ति की प्राप्ति को सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र के माध्यम से किया जा सकता है।
- बौद्ध धर्म में त्रिरत्न में बुद्ध, धम्म (सिद्धांत, या शिक्षा), और संघ (मठ व्यवस्था, या समुदाय) शामिल हैं। कोई यह कहकर बौद्ध बन जाता है कि 'मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं, मैं धम्म की शरण में जाता हूं, मैं संघ की शरण के लिए जाता हूं।'

Q.28) जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच समानता के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. दोनों ने वेदों की सत्ता को अस्वीकृत कर दिया तथा मोक्ष प्राप्त करने के साधन के रूप में मानवीय प्रयास पर जोर दिया।

2. दोनों ने ब्राह्मणों सहित अन्य सभी वर्णों पर क्षत्रिय वर्ण की श्रेष्ठता पर ध्यान केंद्रित किया।
3. दोनों ने सभी जातियों और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों का स्वागत किया।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1 और 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.28) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	सत्य
बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों ने वेदों की सत्ता को अस्वीकार कर दिया, मोक्ष प्राप्त करने के साधन के रूप में त्याग और मानव प्रयास पर जोर दिया, तथा पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक मठवासी व्यवस्था की स्थापना की। बौद्ध धर्म की तरह, जैन धर्म मौलिक रूप से नास्तिक है; यद्यपि यह देवताओं के अस्तित्व को पहचानता है, फिर भी यह उन्हें विषयों की सार्वभौमिक योजना में महत्व देने से इनकार करता है और देवताओं को जिन (विजेता) से नीचे रखता है।	जैन और बौद्ध दोनों ही ब्राह्मणों सहित अन्य सभी वर्णों पर क्षत्रिय वर्ण की श्रेष्ठता पर केंद्रित थे। वे दोनों ब्राह्मण के अर्थ को एक नया अर्थ देने का प्रयास करते थे, जो कि अच्छे कार्यों द्वारा प्राप्त की गई स्थिति पर बल देते हुए जोर देते थे। वे एक बुद्धिमान व्यक्ति को स्वीकार करने के अर्थ में 'ब्राह्मण' शब्द का उपयोग करते हैं, जो सच्चा ज्ञान रखता है और एक अनुकरणीय जीवन जीता है।	बौद्ध संघ व्यवस्था की तरह, जैन धर्म में सभी जाति और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों का स्वागत किया गया। हरिकेशिया नाम के एक विद्वान जैन भिक्षु के बारे में अक्सर उल्लेख मिलता है, जो एक चांडाल परिवार के थे। ब्राह्मण वर्ण का प्रतिनिधित्व भद्रबाहु, दिवाकर, जिनसेन और हरिभद्र द्वारा किया जाता था। इसी तरह, जैन धर्म ने महिला भिक्षुणियों के लिए अपने दरवाजे खोले, जिन्हें आर्यिका या साध्वी के रूप में संबोधित किया जाता था।

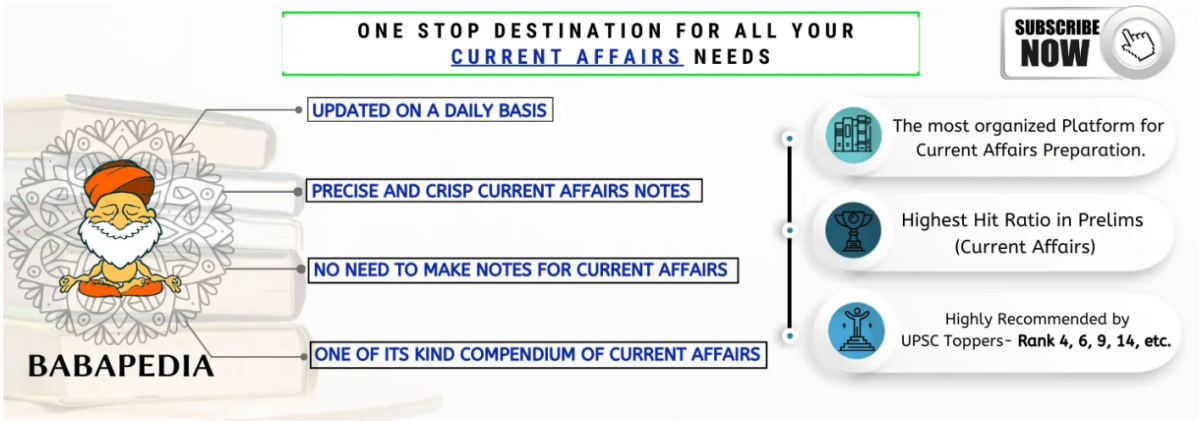

Q.29) अशोक के बौद्ध धर्म में धर्मांतरण के बारे में कौन से शिलालेख में उल्लेख है?

a) हाथीगुम्फा अभिलेख
b) भाब्रू अभिलेख

c) कलसी अभिलेख
d) रुम्मिनदेई अभिलेख

Q.29) Solution (b)

- भाब्रु अभिलेख कहता है कि उपगुप्त के प्रभाव में अशोक बौद्ध बन गया था।
- रुम्मिनदेई अभिलेख बुद्ध के जन्मस्थान लुंबिनी के बारे में वर्णन करता है।
- उत्तर भारत में अशोक का एकमात्र अभिलेख, कलसी अभिलेख है। यह देहरादून में स्थित है।

Q.30) बौद्ध परिषदों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?

a) प्रथम बौद्ध परिषद महाकस्सप्प की अध्यक्षता में राजगृह में आयोजित की गई थी।
b) वसुमित्र ने वैशाली में आयोजित द्वितीय बौद्ध परिषद की अध्यक्षता की थी।
c) तृतीय बौद्ध परिषद पाटलिपुत्र में अशोक के संरक्षण में आयोजित की गई थी।
d) चौथी बौद्ध परिषद कश्मीर में कनिष्क द्वारा आयोजित की गई थी।

Q.30) Solution (b)

बौद्ध परिषद	स्थान	शासक	अध्यक्ष
पहला (483 ईसा पूर्व)	राजगृह	अजातशत्रु	महकस्सप
दूसरा (383 ईसा पूर्व)	वैशाली	कालाशोक	सब्बकामी
तीसरा (250 ईसा पूर्व)	पाटलिपुत्र	अशोक	मोगलिपुत्त तिस्स
चौथी (पहली शताब्दी ईसा)	कश्मीर	कनिष्क	वसुमित्र

वैशाली में आयोजित दूसरी बौद्ध परिषद की अध्यक्षता सब्बाकामी ने की। इसलिए विकल्प (b) गलत है।

Q.31) तीन 'संगम' या तमिल कवियों का 'एक मिलन, निम्नलिखित में से किसके संरक्षण में बुलाई गई हैं?

a) चेर
b) चोल
c) पांड्य
d) पल्लव

Q.31) Solution (c)

- संगम युग दक्षिण भारत के प्रारंभिक इतिहास में उस अवधि को संदर्भित करता है, जब तमिल में बड़ी संख्या में कविताओं की रचना कई लेखकों ने की थी। 'संगम' शब्द का तात्पर्य तमिल कवियों की सभा या मिलन से है।
- माना जाता है कि मदुरै के पांड्य राजाओं के संरक्षण में तीन संगमों या सभाओं को एक के बाद एक विभिन्न स्थानों पर बुलाया गया था।
- कविताओं को पुराने समय के मार्मिक गीतों पर आधारित किया गया था, तथा अंत में कवियों द्वारा लिखे जाने से पहले उन्हें अनिश्चित काल के लिए मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था।

संगम	संगम का स्थान	अध्यक्ष	परिणाम / प्रासंगिक तथ्य
प्रथम	थेनमदुरै (Thenmadurai)	अगस्त्य	इस सभा के कोई अवशेष नहीं बचे हैं।
द्वितीय	कपाटपुरम	अगस्त्य तोलकप्पियार (अगस्त्य का एक शिष्य)	तोल्कपियर द्वारा केवल तोल्कापियम (एक तमिल व्याकरण) अभी मौजूद है।
तृतीय	मदुरै	नक्किरर्	मौजूदा संगम साहित्य के संपूर्ण कोष को संरचित करता है।

Q.32) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

दर्शन	संस्थापक
1. द्वैत	शंकराचार्य
2. विशिष्टाद्वैत	रामानुज
3. शुद्धाद्वैत	निम्बार्क
4. द्वैताद्वैत	वल्लभाचार्य

ऊपर दी गई कौन सी जोड़ी गलत तरीके से मेल खाती है?

a) केवल 1 और 4
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1, 2 और 3
d) केवल 1, 3 और 4

Q.32) Solution (d)

- नौवीं शताब्दी में शंकराचार्य ने हिंदू धर्म को एक नया उन्मुखीकरण देते हुए एक हिंदू पुनरुत्थानवादी आंदोलन आरंभ किया। उनका जन्म केरल के कलाडी में हुआ था। अद्वैत या अद्वैतवाद के उनके सिद्धांत का सार आम जन को बहुत आकर्षित करने वाला था। इसके अलावा, सगुणब्रह्मण (गुणों के साथ ईश्वर) के विचार के उदय के साथ निर्गुणब्रह्मण (गुणों के बिना ईश्वर) की अद्वैत अवधारणा के विरुद्ध प्रतिक्रिया भी हुई।
- बारहवीं शताब्दी में, आधुनिक चेन्नई के पास श्रीपेरुम्बुदूर में पैदा हुए रामानुज ने विशिष्टद्वैत का प्रचार किया। उनके अनुसार भगवान सगुणब्रह्मण हैं। रचनात्मक प्रक्रिया और सृष्टि की सभी वस्तुएं वास्तविक हैं, माया नहीं है जैसा कि शंकराचार्य द्वारा कहा गया था। इसलिए, ईश्वर, आत्मा, पदार्थ वास्तविक हैं। लेकिन ईश्वर आंतरिक पदार्थ है और बाकी उसके गुण हैं।
- तेरहवीं शताब्दी में, कन्नड़ क्षेत्र के माधव ने जीवात्मा और परमात्मा के द्वैत या द्वैतवाद का प्रचार किया। उनके दर्शन के अनुसार, संसार एक माया नहीं है बल्कि एक वास्तविकता है। ईश्वर, आत्मा, पदार्थ प्रकृति में अद्वितीय हैं।

- निम्बार्क का द्वैतवाद: द्वैतवाद का अर्थ द्वैतवादी अद्वैतवाद है। इस दर्शन के अनुसार भगवान ने स्वयं को संसार और आत्मा में बदल लिया है। यह संसार और आत्मा ईश्वर (ब्रह्म) से अलग है। वे केवल ईश्वर के सहारे जीवित रह सकते थे। वे अलग हैं लेकिन निर्भर हैं।
- वल्लभाचार्य की शुद्धाद्वैत: वल्लभाचार्य ने वेदांत सूत्र और भगवद्गीता पर भाष्य लिखे। उसके लिए ब्राह्मण (भगवान) श्री कृष्ण थे जिन्होंने स्वयं को आत्मा और पदार्थ के रूप में प्रकट किया। ईश्वर और आत्मा अलग-अलग नहीं हैं, बल्कि एक हैं। उनका ज़ोर शुद्ध गैर-द्वैतवाद पर था। उनके दर्शन को पुष्टिमार्ग (अनुग्रह का मार्ग) के रूप में जाना जाता था तथा स्कूल को रुद्रसम्प्रदाय कहा जाता था।

Q.33) मध्यकालीन भारत के धार्मिक इतिहास में सूफी आंदोलनों के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह खलीफा के बढ़ते भौतिकवाद के विरोध में उठा था।
2. सूफियों ने धर्मशास्त्रियों द्वारा कुरान की कट्टर व्याख्या की आलोचना की।
3. सभी सिलसिलों के सूफियों ने 'शरीयत' कानूनों को नकार दिया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.33) Solution (a)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	असत्य
इस्लाम के शुरुआती शताब्दियों में, धार्मिक उत्साही वाले लोगों का एक समूह जिसे 'सूफी' कहा जाता है,के द्वारा धार्मिक और राजनीतिक संस्था के रूप में खलीफा के बढ़ते भौतिकवाद के विरोध में तप और रहस्यवाद पर बल दिया गया।	सूफियों ने धर्मशास्त्रियों द्वारा अपनाई गई 'कुरान और सुन्नत' (पैगंबर की परंपराओं) की व्याख्या करने की कट्टर परिभाषाओं और विद्वानों के तरीकों की आलोचना की। इसके बजाय उन्होंने ईश्वर के प्रति गहन श्रद्धा और प्रेम के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने पर जोर दिया।	कुछ सूफियों ने सूफी सिलसिलों की कटटरवादी व्याख्या के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। उन्होंने अनुष्ठानों को नजरअंदाज कर दिया और अत्यधिक तपस्वियों का पालन किया, ब्रह्मचर्य का पालन किया, आदि वे अलग-अलग नामों से जाने जाते थे, जैसे - 'कलंदर', 'मदारी', 'मलंग्स', 'हैदरी', आदि। उनकी जानबूझकर अवज्ञा के कारण उन्हें , बे-शरा, शरीयत के नाम से जाना जाता था। उन सूफियों के विपरीत, जिन्होंने शरीयत (बा-शरा) का अनुपालन किया था।

Q.34) संगम कालीन निम्नलिखित शब्दों पर विचार करें:

शब्द	संबद्धता
1. पलै (Palai)	बंजर भूमि
2. पनार (Panar)	गायन मंडली
3. पट्टीनापलै (Pattinappalai)	सीमा-शुल्क अधिकारी

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 1 और 2
d) 1, 2 और 3

Q.34) Solution (d)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
सत्य	सत्य	सत्य
तोल्काप्पियम भूमि के पांच-प्रकार के विभाजन को संदर्भित करता है - कुरिनजी (पहाड़ी क्षेत्र), मुलई (पशुचारगाह), मरुदम (कृषि), नेयदाल (तटीय) और पलै (मरुस्थल)।	संगम युग के लोगों के बीच कविता, संगीत और नृत्य लोकप्रिय थे। शाही दरबार पनार और विरालियार नामक गायन मंडलों की भीड़ थी। वे लोक गीत और लोक नृत्यों के विशेषज्ञ थे।	भू-राजस्व राज्य की आय का मुख्य स्रोत था जबकि विदेशी व्यापार पर सीमा-शुल्क भी लगाया जाता था। पट्टिनाप्पलै पुहार के बंदरगाह में कार्यरत सीमा-शुल्क अधिकारियों को संदर्भित करता है।

Q.35) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. दशमलव स्थान मूल्य प्रणाली का सबसे पुराना ज्ञात योग्य प्रमाण पिंगल के छंदसूत्र में पाया जा सकता है।
2. वराहमिहिर का पंचसिद्धांत शून्य का प्रतीक और संख्या दोनों के रूप में उपयोग करने वाला सबसे पुराना ज्ञात योग्य पाठ था।
3. अष्टांगसमग्र (Ashtangasamgraha) खगोल विज्ञान पर पहले ग्रंथों में से एक था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 3
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.35) Solution (b)

कथन 1	कथन 2	कथन 3

असत्य	सत्य	असत्य
सुल्वसूत्र उस स्थल की तैयारी के लिए मैनुअल थे जहाँ वैदिक यज्ञ अनुष्ठान किए जाने थे तथा उन्होंने ज्यामिति की नींव रखी। गणित शास्त्र (गणित) कहीं अधिक उन्नत था क्योंकि दशमलव स्थान मान प्रणाली का सबसे पुराना ज्ञात योग्य प्रमाण ज्योतिष पर एक तीसरी शताब्दी के कार्य में पाया जा सकता है जिसे **सफ़ुजिध्वजा (Sphujidhvaja)** द्वारा **यवनजटक (Yavanajataka)** कहा जाता है (जो कि शून्य का उल्लेख नहीं करता है)।	लेकिन इससे भी पहले के काम में, पिंगल के छंदसूत्र, शून्य प्रतीक का उल्लेख मैट्रिक्स में प्रयुक्त डॉट के रूप में करता है। वराहमिहिर का **पंचसिद्धांत, जो गुप्त काल से संबंधित था, शून्य का प्रतीक और संख्या दोनों के रूप में उपयोग करने के लिए सबसे आरंभिक ज्ञात पाठ था।**	चिकित्सा के क्षेत्र में, वाग्भट्ट इस अवधि के थे। वह प्राचीन भारत की महान चिकित्सा तिकड़ी के अंतिम विद्वान थे। अन्य दो विद्वान चरक और सुश्रुत गुप्त युग से पहले के थे। **वाग्भट अष्टांगसमग्रह (चिकित्सा की आठ शाखाओं का सारांश) के लेखक** थे। सुश्रुत की सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा से संबंधित है।

Q.36) अभिधर्मकोश, आज भी बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण विश्वकोश माना जाता है, यह निम्नलिखित में से किसके द्वारा लिखा गया था?

a) बुद्धघोष
b) धर्मकीर्ति
c) वसुबंधु
d) अश्वघोष

Q.36) Solution (c)

- असंग और वसुबंधु दो भाई थे, जिन्होंने चौथी शताब्दी ईस्वी में पंजाब क्षेत्र में प्रचार-प्रसार किया था।
- असंग अपने गुरु मैत्रेयनाथ द्वारा स्थापित योगाचार या विज्ञानवाद स्कूल के सबसे महत्वपूर्ण शिक्षक थे।
- वसुबंधु का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य, 'अभिधर्मकोश', अभी भी बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण विश्वकोश माना जाता है।
- अश्वघोष संस्कृत में 'बुद्धचरित' के लेखक हैं।
- पांचवीं शताब्दी में रहने वाले बुद्धघोष एक महान पाली विद्वान थे। उनका सबसे प्रसिद्ध कार्य 'विशुद्धिमग्गा' (शुद्धिकरण का मार्ग) है', जो बुद्ध के मोक्ष के थेरवाद की अवधारणा का एक व्यापक सारांश और विश्लेषण है।
- दिङ्नाग को बौद्ध तर्क के संस्थापक के रूप में जाना जाता था। धर्मकीर्ति जो सातवीं शताब्दी ईस्वी में रहते थे, एक महान बौद्ध तर्कशास्त्री, सूक्ष्म दार्शनिक विचारक और वार्ताकार थे।

Q.37) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

साहित्यिक कार्य	लेखक

1. रघुवंशम्	कालिदास
2. देवीचन्द्रगुप्तम	दंडिन
3. मृच्छकटिकम्	शूद्रक
4. पंचतंत्र की कहानियाँ	विशाखदत्त
5. किरातार्जुनीयम्	भारवि

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा सही तरीके से सुमेलित है?

a) केवल 1, 2 और 4
b) केवल 3, 4 और 5
c) केवल 1, 3 और 5
d) केवल 1, 2, 3 और 4

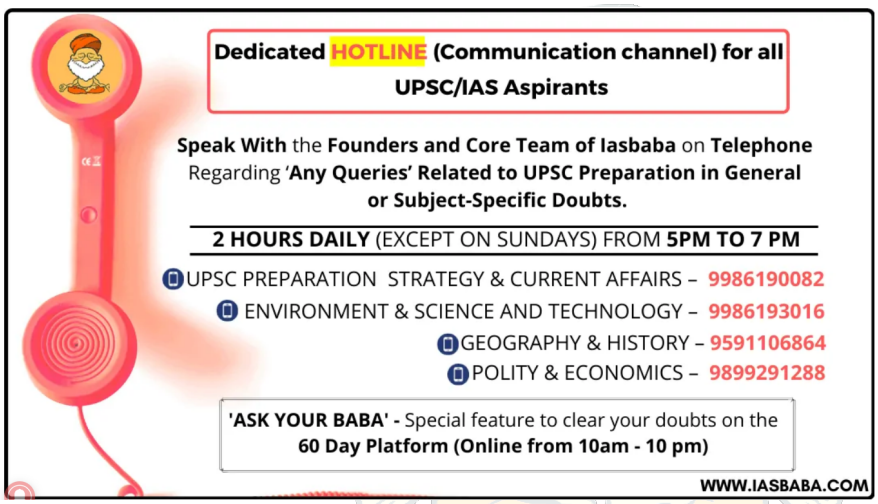

Q.37) Solution (c)

- गुप्त काल में संस्कृत भाषा प्रमुख हो गई थी। नागरी लिपि ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का दरबार प्रतिष्ठित नवरत्नों द्वारा सुशोभित था। उनके बीच कालिदास सबसे महत्त्वपूर्ण थे। उनका मुख्य कार्य संस्कृत नाटक शकुंतला था। इसे संसार की 'सौ सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों' में से एक माना जाता है। उन्होंने दो अन्य नाटक - मालविकाग्निमित्र और विक्रमोवर्शियम लिखे। उनके दो प्रसिद्ध महाकाव्य रघुवंश और कुमारसंभव हैं। ऋतुसंहार और मेघदुत उनके दो गीत काव्य हैं।
- विशाखदत्त इस अवधि के एक और प्रतिष्ठित लेखक थे। वह दो संस्कृत नाटकों, मुदाराक्षस और देवीचंद्रगुप्तम के लेखक थे।
- शुद्रक इस युग के एक प्रसिद्ध कवि थे तथा उनकी पुस्तक मृच्छकटिकम हास्य और करुणा में समृद्ध है।
- भारवि की किरातार्जुनीयम् अर्जुन और शिव के बीच संघर्ष की कहानी है। दंडिन कविदास और दासकुमारचारित के लेखक थे।
- इस अवधि का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य वासवदत्ता, सुबंधु द्वारा लिखा गया था। गुप्त काल के दौरान पंचतंत्र की कहानियां विष्णु शर्मा द्वारा रची गई थीं। बौद्ध लेखक अमरसिंह ने अमरकोश नाम के एक ग्रंथ की रचना की।

Q.38) निम्नलिखित विदेशी यात्रियों में से किसने गंगा की घाटी को 'ब्राह्मणवाद की भूमि' (land of Brahmanism) कहा था?

a) मेगस्थनीज़
b) मार्को पोलो
c) टॉलेमी
d) फा ह्यान

Q.38) Solution (d)

- प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री फ़ा ह्यान ने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया था। अपने नौ साल भारत में रहने के बाद, उन्होंने गुप्त साम्राज्य में छह साल बिताए। फा ह्यान गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।
- उनके अनुसार, उत्तर पश्चिमी भारत में बौद्ध धर्म एक उत्कर्ष की स्थिति में था लेकिन गंगा की घाटी में यह उपेक्षा की स्थिति में था। वह गंगा की घाटी को 'ब्राह्मणवाद की भूमि' के रूप में संदर्भित करता है। फा-ह्यान में कपिलवस्तु और कुशीनगर जैसे कुछ बौद्ध पवित्र स्थानों की असंतोषजनक स्थिति का उल्लेख है। उनके अनुसार साम्राज्य की आर्थिक स्थिति समृद्ध थी।

Q.39) शासक कनिष्क द्वारा निम्नलिखित महान विद्वानों और प्रख्यात व्यक्तित्वों में से किसे संरक्षण दिया गया था?

1. अगेसीलौस (Agesilaus)
2. नागार्जुन
3. मातंग दिवाकर
4. चरक

नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1, 2 और 4
c) केवल 2, 3 और 4
d) केवल 1, 2 और 3

Q.39) Solution (b)

- कुषाण वंश के सबसे महत्वपूर्ण शासक कनिष्क (78 - 120 ई.) ने उस समय के महान विद्वानों और प्रख्यात व्यक्तित्वों का संरक्षण किया:
- अश्वघोष: एक बौद्ध विद्वान, जिन्होंने बुद्धचरित (बुद्ध की पवित्र जीवनी) लिखी तथा सौन्दरानंद (एक संस्कृत काव्य) की रचना की।
- चरक: उन्हें आयुर्वेद के पिता के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने चरकसंहिता नाम की दवा पर एक किताब लिखी थी
- वसुमित्र: एक प्रसिद्ध दार्शनिक जिनके द्वारा लिखित बौद्ध दर्शन के ज्ञानकोश को महाविभाषा कहा जाता है।
- नागार्जुन: उन्हें अक्सर एक भारतीय आइंस्टीन कहा जाता है जिन्होंने अपने समय में थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी का प्रस्ताव एक सूत्र, प्रजना परिमता सूत्र (*Prajna Parimata Sutra*) के रूप में किया। वह महायान सिद्धांत के एक महान प्रतिपादक थे और उन्होंने माध्यमिका (जिसे सूर्यवद स्कूल भी कहा जाता है) को प्रचारित किया, जो शून्यता पर केंद्रित है
- मथारा: वह एक मंत्री थे जो अपने असामान्य बुद्धिमत्ता के लिए जाने जाते थे।
- अगेसीलौस: एक यूनानी इंजीनियर, जिनके मार्गदर्शन में, यह माना जाता है, पुरुषपुर का महान स्तूप बनाया गया था।
- हर्षवर्धन (606 – 647 ई.) विद्या के महान संरक्षक थे। उनके जीवनी लेखक बाणभट्ट ने उनके शाही दरबार को सुशोभित किया। हर्षचरित के अलावा, उन्होंने कादम्बरी लिखी। हर्ष के दरबार में अन्य साहित्यकार मातंग दिवाकर और प्रसिद्ध वृहतहरि थे, जो कवि, दार्शनिक और व्याकरणविद थे।

Q.40) इब्न बतूता, एक विदेशी यात्री के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वह एक इतालवी यात्री था।
2. वह मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत आया था।
3. उनकी यात्रा की पुस्तक को 'किताब-उल-हिंद' कहा जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है / हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 2 और 3
d) 1, 2 और 3

Q.40) Solution (b)

कथन 1	कथन 2	कथन 3
असत्य	सत्य	असत्य
मोरक्को का एक विदेशी यात्री इब्न बतूता 1333 में सिंध पहुंचा।	उन्होंने दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के बारे में सुना था तथा मुल्तान और उच से गुजरते हुए उन्हें दिल्ली के लिए स्थापित एक उदार कला और ज्ञान के संरक्षक के रूप में इसकी प्रतिष्ठा ने आकर्षित किया था। सुल्तान उनकी विद्वता से प्रभावित हुए, और उन्हें दिल्ली का क़ाज़ी या	उन्होंने अरबी में यात्रा पर 'किताब-उल-रिहला' लिखी। 'किताब-उल-हिंद' फारस के अल-बरूनी द्वारा लिखी गई थी।

	न्यायाधीश नियुक्त किया।	

Copyright © by IASbaba

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of IASbaba.

Copyright © by IASbaba
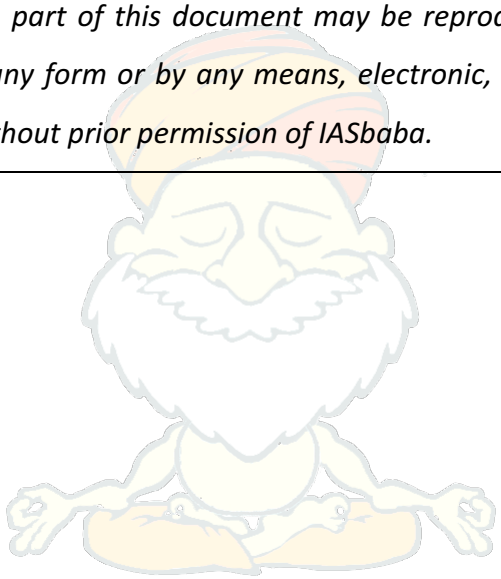
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of IASbaba.